International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5. 12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 259-260

रामायण काल में संगीत व अवनद्ध का महत्त्व

Hema Dani[1]
[1] Kumaun University, Uttarakhand, India

प्रस्तावना

भारतीय संगीत की योजना सामाजिक जीवन के हर पहलू को ध्यान में रखकर की गई है। भारतीय जीवन में संगीत कला की भूमिका शताब्दियों से आध्यात्मिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, शास्त्रीय तथा कलात्मक परम्पराओं पर आधारित है। भारतीय संस्कृति में संगीत का आरम्भ ही आध्यात्मवादी है। भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि देवतागण संगीत कला के महान उपासक थे। डमरूधारी भगवान शिवशंकर स्वयं सगीत के साक्षात् स्वरूप हैं। देवी–देवताओं में नारद, विष्णु, इन्द्र, सरस्वती, कृष्ण, अर्जुन, उर्वशी, रंभा आदि संगीत में निपुण थे और रावण भी संगीत का श्रेष्ठ ज्ञाता था। इस बात का प्रमाण हमें प्राचीन काल के पाषाण और धातु से निर्मित मूर्तियों का अवलोकन करने एवं संगीत विषयक ग्रन्थों के अध्ययन से मिलता है।

गीत, वाद्य, नृत्य तीनों संगीत कला के अन्तर्गत आते हैं तथा तीनों के सामंजस्य से आहत नाद की सम्मोहिनी शक्ति अभिव्यक्त होती है। संगीत के अन्तर्गत गीत को प्रधान और वाद्य तथा नृत्य का कार्य गीत का उपरंजन करते हुए सम्यक बनाना है। अतः वाद्य को गीत का अनुगामी कहा गया है। वाद्य का प्रयोजन गीत एवं नृत्य आदि की सौन्दर्याभिवृद्धि करते हुए लोकानुरंजन करना है। रामायण में हमें संगीत के तीनो तत्वो गायन,वादन,नृत्य का उल्लेख मिलता है।

आदिकवि वाल्मीकि जी के अनुसार रामायण की रचना गेय काव्य के रूप में हुई है तथा रामायण काल के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सामगान की परम्परा इस काल में विधिवत् रूप से थी। रामायण काल में सामगान तथा गान्धर्व यह दोनों प्रकार का संगीत प्रचार में था। उस समय सात स्वरों का विकास हो चुका था तथा सामगान में सात स्वरों का प्रयोग होता था। सामगान का प्रयोग यज्ञादि कार्यों व धार्मिक अनुष्ठानों में होता था। यह सामगान ईश्वर के प्रति मंत्रों द्वारा उपासना का पथ था।

साम गायन के साथ देवताओं की पूजा एवं ध्यान में होम यज्ञादि किए जाते थे। साम गान का प्रथम विकास प्राचीन ऋषि मुनियों द्वारा हुआ तथा ऋषिकुलों एवं गुरुकुलों में शिक्षित लोगों ने भारतीय सभ्यता, संस्कृति व संगीत के विकास में अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया है। इस काल में गायन, नृत्य, तथा लय वाद्यों के वादन से विहीन किसी राज्य की कल्पना एक असम्भव बात थी अर्थात् इस काल में चारों ओर अयोध्या, लंका, आदि में सांगीतिक वातावरण था। इन ग्रन्थों में तत्कालीन अवनद्ध वाद्यों में दुन्दुभि, मृदंग, मुरज, पणव, आडम्बर, डिमडिम, भेरी, झर्झट आदि अवनद्ध वाद्यों का उल्लेख है। इन वाद्यों की मंगल ध्वनि नगर की सुख सम्पन्नता की द्योतक थी।

रामायण में वर्णन है कि पिता के निधन पर जब भरत अयोध्या लौटे, तब वाद्य–ध्वनि न सुनाई देने पर उन्हें विस्मय हुआ। भावाभिव्यक्ति करने में अवनद्ध वाद्य सहायक होते हैं।

रामायण काल में संगीत और नृत्य आदि कलाएँ किसी वर्ग विशेष की वस्तु न रहकर सामान्य लोकरुचि का विषय बन चुकी थी। इस काल में संगीत के तीनों उपकरण गायन, वादन व नृत्य की उन्नति हुई तथा अनेक व्यक्तियों का जीवन गाने, बजाने व नाचने पर ही निर्भर था। वे उसी के द्वारा अपना जीवन निर्वाह करते थे।

रामायण काल में मनुष्यों में जो सौम्यता, जो सुन्दर कल्पना, जो प्रभावशाली उमंग एवं जो आनन्दपूर्ण चेतना प्राप्त होती है। वह संगीत के विकास के कारण ही हैं। इस काल में जब राजा ही संगीत मर्मज्ञ थे। तो फिर उनकी प्रजा क्यों नहीं होगी? राम–रावण और कौरव–पाण्डवों की पुरातन कथाओं को मौखिक रूप में सुरक्षित रखने और समाज में प्रचलित करने का कार्य भी तत्कालीन कुशीलवों नट–नर्तकियों–गायकों और चारणों ने किया। इनके साथ वादक भी रहते थे।

रामायण काल तक आते–आते वैदिक संगीत का रूप बदल चुका था। उसका रूप बहुत कुछ अभिजात हो गया था। इस काल में गायन, नृत्य तथा लय वाद्यों के वादन से विहीन किसी राज्य की कल्पना करना एक असम्भव बात थी। तथा तत्कालीन वाद्यों में दुन्दुभि, आनक, मृदंग, मुरज, पणव, पटह, आडम्बर डिमडिम, भेरी आदि अवनद्ध वाद्यों का उल्लेख है, वाद्यों की मंगल–ध्वनि सुख सम्पन्नता की द्योतक मानी गई है।

श्री रामचन्द्र जी के विवाहोत्सव के अवसर पर मृदंग, दुन्दुभि वीणा आदि वाद्यों का वादन किया गया था। इसी प्रकार जब रामचन्द्र जी चौदह वर्ष का वनवास काटकर पुनः अयोध्या लौटे तो मृदंग, दुन्दुभि वाद्यों की ध्वनि से महल गूँज उठा। उक्त प्रसंगों में अवनद्ध वाद्यों की विशेष उपयोगिता और महत्व परिलक्षित होता है।

रामायण के उत्तरकाण्ड में ऐसा वर्णन मिलता है जिसमें रावण सामगान के माध्यम से शिव की आराधना करता था।

रावण स्वयं संगीत का अभ्यास करता था। सामगान की पद्धति से यह बात ज्ञात होती है कि उस समय धार्मिक संगीत के प्रति विशेष रुचि थी।

सामवेद का उस समय विधिवत् गान होता था। सामवेद का गान भाद्रमास से प्रारम्भ होता था।

संगीत के स्थूल नियम वैदिक काल में बन चुके थे, किन्तु रामायण काल तक संगीत का एक विपुल शास्त्र बन चुका था, जिसका सामान्य नाम था गान्धर्व। यह मार्ग शैली का उच्च अभिजात्य संगीत था तथा इसके अन्तर्गत देशी संगीत भी उस समय था।

गान्धर्व की दो शैलियाँ थी पहली मार्ग विधान से सुसज्जित मार्ग शैली जो अभिजात्य वर्ग के लिए थी।

दूसरी देशी शैली – जो सरल जन जीवन का मनोरंजन करने वाली व लोगों की रुचि के अनुसार मनोरंजन प्रधान संगीत था, जिसे हम लोक संगीत भी कह सकते हैं।

इस प्रकार लव और कुश ने मार्ग विधान से रामायण गाया था। जिसमें स्वर, पद, ताल, प्रमाण आदि सभी अंगो का समावेश था।

रामायण काल में संगीत का व्यापक उपयोग होता था। प्रातः जगाने के लिए, आराधना उत्सव के समय, युद्ध में वीरों को उत्साहित करने के लिए विभिन्न अवसरों पर संगीत का वर्णन मिलता है। रामायण काल में संगीत का जीवन के अभिन्न अंग के रूप में प्रयोग हुआ है।

रामायण काल में राजाओं का जीवन संगीत से परिप्लवित रहता

था। प्रत्येक राजा यथा– राम, दशरथ, रावण आदि प्रतिदिन चारणों, सूत मागधों, बन्दियों की स्तुति से जगाये जाते थे।

जो संगीत विषयक प्रमाण हमें इस ग्रन्थ में प्राप्त होते हैं। इन प्रमाणों को देखते हुए यह कहना उचित होगा कि रामायणकालीन समाज में संगीत का प्रचार यथेष्ट रूप से था। इस काल में शास्त्रीय पद्धति से प्रयोग किये जाने वाले संगीत को महत्वपूर्ण समझा गया है। समाज के बाह्मणवर्ग व अभिजात्य वर्ग के अलावा संगीत जनसाधारण व राजाओं के वर्ग में अधिक लोकप्रिय था तथा इस काल में संगीत को अधिक सम्मान प्रदान किया गया है।

रामायण काल में गायन का अभिन्न अंग वादन रहा है। रामायण में जिन अवनद्ध वाद्यों का उल्लेख मिलता है वे हैं :– भूमिदुन्दुभि, दुन्दुभि, भेरी, मृदंग, पणव, पटह, डिण्डिम, आडम्बर, मडडुक मुरज, चेलिका इत्यादि हैं।

रामायण काल में वाद्यों के लिए प्रचलित संज्ञा 'तूर्य' थी तथा उनके अन्तर्गत शंख, दुन्दुभि, सुघोषा एवं विविध वेणुवाद्यों का अन्तर्भाव था। वाद्यों को 'आतोद्य' कहा जाता था। तत तथा आनद्ध वाद्यों का वादन जिस दण्ड या उपकरण से किया जाता था, उसके लिए ''कोण संज्ञा'' थी।

आनद्ध या चर्मावृत वाद्यों में मृदंग, आलिंग्य, उर्ध्वक, आडम्बर, पणव, मुरज, चेलिका, दुन्दुभि आदि का उल्लेख रामायण में अनेक स्थानों पर मिलता है। रामायण में अनेक बार वर्णन है कि राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के जन्म के समय गन्धर्वों ने मधुर गीत गाये, अप्सराओं ने नृत्य किया, देवताओं की दुन्दुभियाँ बजने लगीं तथा आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी।

उक्त प्रसंगों में संगीत के साथ–साथ वाद्यों की विशेष उपयोगिता और उनका महत्व परिलक्षित होता है।इस काल में संगीत का रूप वैदिक काल के संगीत के रूप से कुछ परिवर्तित हो गया था, और यह परिवर्तन मौलिक तथ्यों में न होकर उसकी प्रदर्शन करने की शैलियों में हुआ ।,

सन्दर्भ सूचि

1. गैरोला वाचस्पति : प्राचीन भारतीय संस्कति और कला, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनउ, 1967, पृष्ठ सं0 4, 2, 6, 20।
2. ठाकुर सिंह जयदेव : भारतीय संगीत का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक वराणसीं, 1994, पृष्ठ सं0 25, 37, 58।
3. भार्गव : अंजना भारतीय संगीत शास्त्रों में वाद्यों का चिंतन, कनिश्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ सं0 7, 8, 15, 19।
4. मिस्त्री, आबान ई0 : पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें पं0 केकी0 एस0 जिजिना स्वर साधना समिति मुम्बई, 1984, पृष्ठ सं0 4577, 90.
5. मिश्र डॉ0 राज छत्र : प्राचीन भारतीय संस्कति, अनुराग प्रकाशन 131 संत रविदास मार्ग, 1984, पृष्ठ सं0 4, 8, 9.
6. श्रीवास्तव, डॉ0 : धर्मावती प्राचीन भारत में संगीतभारतीय, विद्याप्रकाशन वराणसी, 1973, पृष्ठ सं0 16, 19, 20.
7. पं0 वशिष्ठ, सत्यनारायण : तबले पर दिल्ली और पूरब, संगीत कार्यालय हाथरस, 1969, पृष्ठ सं0 8, 9, 14
8. परांजये, श्रीधर शरच्चन्द्र : भारतीय संगीत का इतिहास, चैखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, राजकमल प्रकाशन, 1970, पृष्ठ सं0 10,17,18
9. आचार्य बृहस्पति : संगीत चिंतमणी, संगीत कार्यालय हाथरस, 1989, पृष्ठ सं0, 11,20,51
10. रामअवतार, संगीताचार्य वीर : भारतीय संगीत वीर संगीत प्रकाशन लारेंस रोड, नई दिल्ली, 1986, पृष्ठ सं0 12, 33